भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान
ICAR- National Institute of Veterinary Epidemiology and Disease Informatics
पोस्ट बॉक्स 6450, यलहंका, बेंगलुरु 560064, कर्नाटक

सर्रा
(ट्रिपेनोसोमयासिस)

सर्रा गाय, भैंस, अश्व, ऊंट, श्वान और बिल्ली सहित घरेलू और जंगली मांसाहारी एवं शाकाहारी पशुओं को ग्रसित करने वाला परजीवीजन्य रोग है। यह एक शरीर को कमजोर और गला देने वाला रोग है।

प्रसार

यह रोग टैबनिड मक्खी (टैबनस, स्टोमोक्सिस और लाइपेरोसिया प्रजाति) के काटने से फैलता है।

लक्षण

- तेज बुखार (105-106° F)
- कमजोरी, दुर्बलता
- त्वचा और श्लेष्मा का लाल होना या संधि पर रक्त स्राव
- अक्षुदा
- आंखो के कार्निया का धुंधलापन
- उत्पादन (शरीर के वजन, दुग्ध और कार्यक्षमता) मे कमी
- गर्भावस्था में गर्भपात
- यहां तक की मृत्यु भी हो सकती हैं।

निदान

रोग निदान के लिए नजदीकी पशु चिकित्सालय या जिला पशुचिकित्सालय पर पशु के रक्त नमूनो की जांच कराये

उपचार

उपचार अपने नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करने के बाद ही दे

नियंत्रण

- पशु शेड या आश्रय के आसपास के क्षेत्र में कीटनाशक का छिड़काव करना चाहिए
- बेड़ो के चारो तरफ जालीदार घेराव करना चाहिए.
- अश्वो के बेड़ों को गाय और भैंसों के बेडो से दूर बनाना चाहिए

- रोग से मृत पशुओं के शव का उचित तरीके से निश्तारण करना चाहिए
- नए लाए गए पशुओं को बेड़ों मे शामिल करने से पहले संगरोध पर रखना चाहिए
- रोग से ग्रसित पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना चाहिए और कम से कम 200 मीटर की दूरी बनाए रखनी चाहिए

*****

संकलित और संपादित
डॉ. पी. पी. सेनगुप्ता, डॉ. अवधेश प्रजापति, डॉ. योगीशराध्या आर., डॉ. सिजु एस. जेकब, डॉ. जी. एस. देसाई , डॉ. जी. गोविन्दराज

प्रकाशक
निदेशक
भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान, पोस्ट बॉक्स-6450, यलहंका, बेंगलुरु-560064, कर्नाटक
फोन: 080-23093110, 23093111 फैक्स: 080- 23093222, वेबसाईट: www.nivedi.res.in, ईमेल: director.nivedi@icar.gov.in